पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय
अगस्त, 2021 महीने की प्रमुख उपलब्धियां

पत्तन क्षेत्र

1. हल्दिया डॉक परिसर ने अप्रैल- अगस्त 2020 के दौरान संभाले गए 15.621 एमटी कार्गो की तुलना में अप्रैल–अगस्त 2021 के दौरान 9.85% की वृद्धि दर्ज करते हुए 17.160 एमटी कार्गो की संभलाई की। कोलकाता डॉक प्रणाली ने अप्रैल- अगस्त 2020 के दौरान संभाले गए 5.281 एमटी कार्गो की तुलना में अप्रैल–अगस्त 2021 के दौरान 8.46% की वृद्धि दर्ज करते हुए 5.728 एमटी कार्गो की संभलाई की।

2. श्यामा प्रसाद मुखर्जी पत्तन, कोलकाता ने अप्रैल- अगस्त 2020 के दौरान संभाले गए 2,54,348 टीईयू की तुलना में अप्रैल–अगस्त 2021 के दौरान 25.66% की वृद्धि दर्ज करते हुए 3,19,618 टीईयू की संभलाई की।

3. जवाहरलाल नेहरू पत्तन में अगस्त, 2020 में संभाले गए 4.74 मिलियन टन की तुलना में अगस्त, 2021 में 6.02 मिलियन टन कुल यातायात की संभलाई की गई, जो पिछले वर्ष के इसी महीने की तुलना में 27.03% अधिक है। इस महीने के यातायात में 5.45 मिलियन टन कंटेनर यातायात और 0.57 मिलियन टन बल्क कार्गो शामिल है, जबकि पिछले वर्ष के इसी महीने में क्रमश: 4.21 मिलियन टन कार्गो यातायात और 0.53 मिलियन टन बल्क यातायात था। पिछले वर्ष के इसी महीने की तुलना में अगस्त, 2021 में कंटेनर यातायात की वृद्धि 29.40% और बल्क कार्गो की वृद्धि 8.15% थी।

सागरमाला- फ्लोटिंग जेट्टियों का विकास

भारत के भीड़-भाड़ वाले मत्स्यन बंदरगाहों के लिए फ्लोटिंग जेट्टियां एक वैकल्पिक समाधान है। ऐसी जेट्टियों के लिए अपतट पर किसी प्रकार के स्थाई निर्माण की आवश्यकता नहीं है होती और इन्हें पर्यावरण पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव डाले बिना किसी दूसरी जगह आसानी से अंतरित किया जा सकता है। बड़ी ज्वारीय लहरों वाले मत्स्यन बंदगाहों के लिए यह सबसे अधिक उपयुक्त है और बदलते जलस्तर के साथ अपने आप को अनुकूलित कर लेती है। एमओपीएसडब्ल्यू ने पत्तनों, जलमार्गों एवं तटों के लिए राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी केंद्र (एनटीसीपीडब्ल्यूसी), आईआईटी मद्रास के साथ 225 से अधिक पहचाने गए स्थानों पर फ्लोटिंग जेट्टियों के लिए डीपीआर तैयार करने के लिए सहयोग किया है और अब तक 56 स्थानों के लिए डीपीआर तैयार किए गए हैं जबकि मत्स्यन बंदरगाह और फिश लैंडिंग सेंटर से संबंधित 42 डीपीआर मत्स्य पालन विभाग के साथ साझा किए गए हैं।

अंतर्देशीय जल परिवहन

1. इस वर्ष अधिकतर राष्ट्रीय जलमार्गो पर कार्गो आवगमन उत्साहवर्धक बना रहा है। पिछले वर्ष की समान अवधि के 90.52 एमएमटी की तुलना में 65.68% की वृद्धि दर्ज करते हुए अप्रैल से जुलाई 2021 तक 32.34 एमएमटी कार्गो यातायात प्राप्त किया गया।
2. 3403.32 एमटी क्रश्ड स्टोन चिप्स से लदे हुए 13 बांग्लादेशी जलयानों ने धुबरी से चिल्मारी, बांग्लादेश तक यात्रा की। बदरपुर टर्मिनल, असम से कार्गो आवागमन शुरू हो गया है और अगस्त 2021 महीने के दौरान 298 एमटी चूना पत्थर से लदे 02 बांग्लादेशी जलयानों ने बदरपुर से नारायणगंज, बांग्लादेश तक की यात्रा की।
3. आईडब्ल्यूएआई ने दिनांक 26.08.2021 को माननीय पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्री की उपिस्थति में निम्नलिखित के साथ समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए:

(i) अंतर्देशीय जलपरिवहन का उपयोग करते हुए नुमालीगढ़ रिफाईनरी के बड़े आयाम के कार्गो (ओडीसी) और परियोजना कार्गो के आवागमन के लिए धनसीरी नदी (रा.ज.31) के विकास हेतु नुमालीगढ़ रिफाईनरी लिमिटेड (एनआरएल)।

(ii) पांडु, गुवाहाटी, असम में पोत मरम्मत सुविधा निर्माण के लिए कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड की सहायक कंपनी, हुगली कोचिन शिपयार्ड लिमिटेड (एचएससीएल)।

4. दिनांक 27 अगस्त, 2021 को गुवाहाटी में ''विकास के इंजन के रूप में जलमार्ग'' विषय पर एक हितधारक कॉनक्लेव आयोजित किया गया। माननीय पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग राज्य मंत्री और हितधारकों ने कॉनक्लेव में भाग लिया।

<u>अनुपालन के बोझ को कम करना (आरसीबी)</u>

इस मंत्रालय के तहत उप-नोडल एंजेसियों अर्थात् नौवहन महानिदेशालय और भारतीय पत्तन संघ ने कमी लाने के लिए चरण-। और चरण-।। में 124 अनुपालनों को पहचाना है। आरसीबी की प्रक्रिया की नियमित समीक्षा की गई थी और पहचानी गई सभी 124 मदों को कम करने का लक्ष्य 15 अगस्त, 2021 से पहले प्राप्त कर लिया गया था।

<u>स्वदेशी विमान वाहक (आईएसी) 'विक्रांत' के समुद्री परीक्षण की शुरुआत</u>

भारतीय नौसेना के लिए कोचीन शिपयार्ड द्वारा स्वदेशी रूप से निर्मित भारत के सबसे सम्मिश्रित संरचना वाले युद्ध पोत, स्वदेशी विमान वाहक 'विक्रांत' का समुद्री परीक्षण अगस्त, 2021 के दौरान शुरू किया गया। विभिन्न नौचालन, संचार और हल उपकरणों के परीक्षणों के अतिरिक्त विक्रांत के प्रोपल्शन संयंत्रों का समुद्र में कठिन परीक्षण किया गया। विशेषकर कोविड-19 महामारी के इस कठिन समय के दौरान, बंदगाह पर विभिन्न उपकरणों के परीक्षण के बाद स्वदेशी विमान वाहक के समुद्री परीक्षण की शुरुआत, देश के लिए एक ऐतिहासिक उपलब्धि है।

लगभग 40,000 टन विस्थापन वाला यह स्वदेशी विमान वाहक देश में निर्मित सबसे बड़ा युद्धपोत है। इस पोत की स्वदेशी रूप से विकसित विशेष ग्रेड इस्पात से बनी 21,500 टन की विशाल संरचना है और इसे पहली बार भारतीय नौसेना पोतों में उपयोग किया गया है। इस पोत पर उपलब्ध लगभग 2000 कि.मी. की केबलिंग, 120 कि.मी. की पाइपिंग और 2300 कंपार्टमेंटों से ही इसके विशाल आकार का अंदाजा लगाया जा सकता है।